>

Title: Regarding problems being faced by the labourers in the country due to the impact of globalization.

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण (साबरकांठा): सभापति महोदय, आपने मुझे शून्यकाल में बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

आज मैं श्रमिकों की विशेषकर असंगठित श्रमिकों के बारे में बात करना चाहता हूं जो कम वेतन पर काम करने के लिए बाध्य हैं जिनका शोषण एवं प्रताड़न हो रहा है। हर तरफ उनके साथ अन्याय होता है। वे जहां काम करते हैं, वहां मालिकों की जेबें मोटी होती जा रही हैं जबकि श्रमिकों का जीवन-यापन तकलीफों से भरा जा रहा है। हालांकि देश में श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए कड़े कानूनों का प्रावधान है। लेकिन ठेकेदारों के माध्यम से भाड़े पर लिये गये कामगारों व असंगठित श्रमिकों को लाभ नहीं मिलता। निजी क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिक शोषण और प्रतिकूल कार्यदिशाओं के कारण निरंतर कुंठा का शिकार बनते जा रहे हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियों द्वारा अपने अधिकतम कार्य आउटसोर्सिंग माध्यम से करवाने के कारण वहां कार्यरत श्रमिकों को नौकरी छूटने का डर रहता है व उन्हें अपने हितों के लिए लड़ने से रोकता है। ऐसे में मेरा सरकार से निवेदन है कि ऐसे शोषित, पीड़ित एवं लाचार श्रमिकों की सुरक्षा की जाए। उनके हितों की रक्षा हेतु श्रम कानूनों में जरूरी बदलाव करते हुए ऐसे श्रमिकों को सुरक्षा दी जाए। ठेकेदारी प्रथा के माध्यम से काम करने वाले श्रमिकों को भी कंपनी का कर्मचारी माना जाए। ऐसे में श्रमिकों का कंपनी के प्रति नजरिया भी बदलेगा और वे उत्पादन में अधिक वफादारी से काम करेंगे। धन्यवाद।

सभापति महोदय : श्री महेन्द्र सिंह पी. चौहाण द्वारा उठाये गये श्रमिक संबंधी विषय के साथ

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी को भी सम्बद्ध किया जाए।